

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 12 अध्याय 12: बारह स्कन्धों का सार

14 September 2026



नैमिषारण्य के एकत्रित ऋषियों के समक्ष विराजमान, सूत गोस्वामी सम्पूर्ण श्रीमद्भागवतम् पर दृष्टि डालते हैं — पुस्तक-दर-पुस्तक उस पावन कथा-धारा का स्मरण करते जो उन्होंने सुनाई, और भगवान् के नाम की पवित्रकारी शक्ति की महिमा गाते हुए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। जैसे-जैसे महान् कथा अपने समापन की ओर बढ़ती है, सूत गोस्वामी सम्पूर्ण भागवत पर दृष्टि डालने हेतु रुकते हैं। इस द्वादश अध्याय में वे सम्पूर्ण ग्रन्थ को एक ही पश्चावलोकी दृष्टि में समेटते हुए, अब तक कहे गए प्रत्येक प्रमुख सूत्र को स्पर्श करते हैं — परीक्षित की कथा, नारद का परामर्श, भगवान् के अनेक अवतार, परम्परा को आगे ले जाने वाले वंश तथा सन्त, और वह सब कुछ जो जगत् के प्रलय तथा राजा के देहोत्सर्ग तक घटित हुआ। तत्पश्चात् वे इस ओर मुड़ते हैं कि शास्त्र को ही पावन क्या बनाता है — भगवान् के नाम तथा लीलाओं में निहित शुद्धिकारी शक्ति, और इस पुराण को सुनने, अध्ययन करने अथवा दान करने वालों को प्राप्त विशिष्ट पुण्य — और अध्याय का समापन भगवान् विष्णु तथा शुक, जिनकी वाणी ने यह पुराण सर्वप्रथम परीक्षित तक पहुँचाई, को हार्दिक प्रणाम के साथ करते हैं। यह अध्याय सम्पूर्ण शास्त्र को एक ही कृतज्ञ दृष्टि में समेट लेता है।

अध्याय-पारेचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 12 (द्वादश स्कन्ध — अन्तिम स्कन्ध)
- अध्याय: 12 (द्वादश अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: श्रीमद्भागवतम् के बारह स्कन्धों का सारांश
- मुख्य वक्ता: सूत गोस्वामी (उग्रश्रवा), नैमिषारण्य के ऋषियों को कथा सुनाते हुए
- मुख्य श्रोता: नैमिषारण्य के ऋषिगण, शौनक के नेतृत्व में
- मुख्य विषय-वस्तु: सम्पूर्ण श्रीमद्भागवतम् का पुस्तक-दर-पुस्तक सारांश, भगवान् के नाम तथा कथा की महिमा, तथा इस पुराण को सुनने, पढ़ने एवं दान करने के फल
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 12, अध्याय 12, श्लोक 1-68
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

सूत का मंगलाचरण

सूत पुनः एक हृदयस्पर्शी प्रणाम से आरम्भ करते हैं — श्रीहरि की भक्ति के उस उदात्त धर्म को, तथा विश्व के रचयिता श्रीकृष्ण को — और, ब्राह्मणों को एक बार फिर प्रणाम करके, भागवत में विवेचित सनातन सत्यों को विस्तार से कहने की प्रतिज्ञा करते हैं।

सूत उवाच

नमो धर्माय महते नमः कृष्णाय वेधसे ।

ब्रह्मणेभ्यो नमस्कृत्य धर्मान् वक्ष्ये सनातनान् ॥ १ ॥

sūta uvāca namo dharmāya mahate namaḥ kṛṣṇāya vedhase brahmaṇebhyo namaskṛtya dharmān vakṣye sanātānān

अर्थ: सूत ने कहा: भक्ति के उदात्त धर्म को नमस्कार, रचयिता श्रीकृष्ण को नमस्कार; और ब्राह्मणों को प्रणाम करके, मैं अब सनातन सत्यों का विवेचन करूँगा। (स्कन्ध 12, अध्याय 12, श्लोक 1)

उन्होंने, वे कहते हैं, भगवान् विष्णु की यह अद्भुत कथा सुनाई है — जिसमें रत्तीभर भी मनुष्यता शेष हो, ऐसे प्रत्येक जन के लिए श्रवण-योग्य — जिसमें समस्त पापों को हरने वाले श्रीहरि, सृष्टि के आदि तथा अन्त-रूप परब्रह्म, आत्म-ज्ञान तथा उसे जागृत करने का उपाय, और वैराग्य सहित भक्ति का धर्म प्रतिष्ठित हैं।

बारह स्कन्धों का विस्तार

तब सूत बारह पुस्तकों की विषय-वस्तु का क्रम से स्मरण करते हैं। प्रथम स्कन्ध ने परीक्षित के जन्म, नारद के पूर्व जीवन, तथा ब्राह्मण के शाप के पश्चात् राजा के अनशन-व्रत का वर्णन किया, जिससे शुक के साथ उनका संवाद आरम्भ हुआ। द्वितीय ने देहत्यागी जीव की योग-गति, नारद तथा ब्रह्मा के संवाद, तथा भगवान् के अवतारों को सिखाया। तृतीय ने विदुर के उद्धव तथा मैत्रेय के साथ संवाद, प्रकृति से सृष्टि का विकास, वराह-रूप में हिरण्याक्ष का वध, तथा भगवान् कपिल के अवतार और देवहूति को उनके उपदेश का वर्णन किया।

चतुर्थ तथा पंचम स्कन्धों ने प्रजापतियों की सन्तति, दक्ष के यज्ञ का विध्वंस, ध्रुव तथा पृथु के आख्यान, प्रियव्रत, ऋषभ तथा भरत की कथा, और पृथ्वी, ज्योतिर्मण्डल एवं पाताल-लोकों का वर्णन दिया। षष्ठ तथा सप्तम ने अजामिल की कथा, वृत्र का जन्म तथा पतन, हिरण्यकशिपु एवं हिरण्याक्ष, और भक्त प्रह्लाद का महान् आख्यान सुनाया।



सारांश के केन्द्र में श्रीकृष्ण की अनन्त लीलाएँ स्थित हैं — वसुदेव के गृह में उनका प्रकट होना, गोकुल में उनका बाल्यकाल, तथा वे असंख्य लीलाएँ जिनसे उन्होंने पृथ्वी का भार हरा — वही विषय जो महान् दशम स्कन्ध को भरता है।

अष्टम तथा नवम ने मन्वन्तरों, गजेन्द्र-मोक्ष, समुद्र-मन्थन, देव-दानव-युद्ध, तथा राजाओं के वंशों — सूर्य एवं चन्द्र वंश, और भगवान् श्रीराम की पावन कथा — का वर्णन किया। दशम स्कन्ध, भागवत का हृदय, भगवान् के श्रीकृष्ण-अवतार का वर्णन करता है — वसुदेव के गृह में उनका प्रकट होना, गोकुल में बाल्यकाल, पूतना तथा अनेक असुरों का वध, कालिय-दमन, गोवर्धन-धारण, और उनकी असंख्य लीलाएँ, पाण्डु-पुत्रों के माध्यम से पृथ्वी का भार हरने तक। एकादश स्कन्ध ने बताया कि भगवान् ने किस प्रकार अपने ही वंश का संहरण किया, उद्धव तथा श्रीकृष्ण का महान् संवाद जिसमें सम्पूर्ण आत्म-ज्ञान सिखाया गया, तथा भगवान् का अपने मर्त्य-रूप को छिपाना। और द्वादश, यह वर्तमान पुस्तक, कलियुग, राजा परीक्षित के देहत्याग, वेदों की शाखाओं, मार्कण्डेय की कथा, तथा भगवान् के रूप एवं सूर्य-देव की महिमा का वर्णन करती है।

भगवान् के नाम की महिमा

सम्पूर्ण शास्त्र का सारांश देकर, सूत भगवान् के नाम तथा कथा की पवित्रकारी शक्ति की ओर मुड़ते हैं। वह व्यक्ति भी जो अनजाने में “हरि की जय!” पुकार उठता है — जब वह लड़खड़ाता, गिरता, पीड़ित होता, या छींकता है — समस्त पापों से मुक्त हो जाता है।

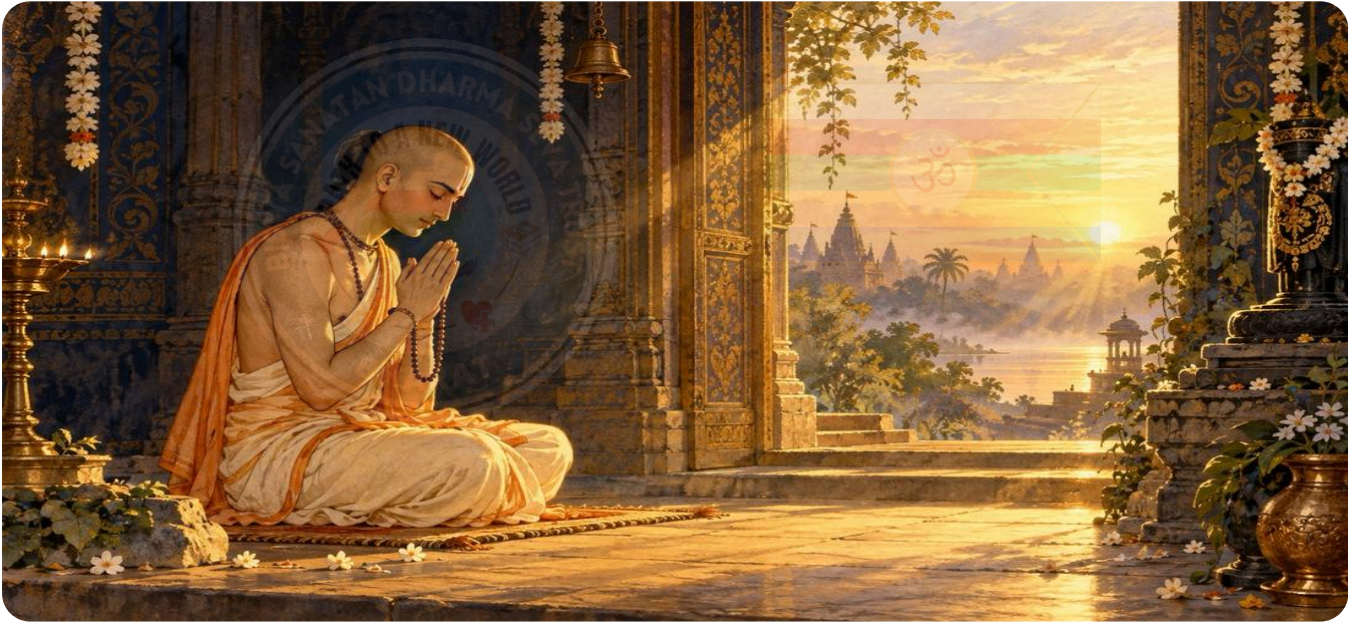
इति चोक्तं द्विजश्रेष्ठा यत्पृष्टोऽहमिहास्मि वः ।

लीलावतारकर्माणि कीर्तितानीह सर्वशः ॥ ४६ ॥

iti coktaṁ dvija-śreṣṭhā yat pṛṣṭo 'ham ihāsmi vaḥ līlāvatāra-karmāṇi kīrtitāniha sarvaśaḥ

अर्थ: इस प्रकार, हे द्विजश्रेष्ठ, जो कुछ आपने मुझसे पूछा, वह सब मैंने कह दिया; और भगवान् के लीला-अवतारों के कर्म यहाँ पूर्णतः महिमा-मण्डित किए गए हैं। (स्कन्ध 12, अध्याय 12, श्लोक 46)

जो उनके नाम का कीर्तन करते या उनकी महिमा सुनते हैं, उनके मन में प्रवेश करके, सूत कहते हैं, अनन्त भगवान् उनके समस्त दुर्भाग्य को समाप्त कर देते हैं, जैसे सूर्य अन्धकार को। वही वाणी सचमुच धन्य तथा पावन है जिससे भगवान् विष्णु की महिमा गाई जाती है; और वह रचना, यद्यपि भाषा में त्रुटिपूर्ण, जो भगवान् के नाम धारण करती है, लोगों के पापों को हर लेती है। भगवान् की भक्ति समस्त ज्ञान तथा कर्म का शिखर है; श्रीकृष्ण के चरण-कमलों का निरन्तर स्मरण समस्त अनिष्टों का अन्त करता, बुद्धि को शुद्ध करता, और आत्म-ज्ञान एवं वैराग्य जगाता है।



सूत सिखाते हैं कि भगवान् का नाम अनजाने उच्चारित होने पर भी पवित्र करता है — "हरि!" की एक ही पुकार पाप को वैसे ही हरती है जैसे सूर्य अन्धकार को (श्लोक 46)।

भागवत के फल

तब सूत इस पुराण के आशीर्वादों की घोषणा करते हैं। जो इसे दोहराता या श्रद्धापूर्वक सुनता है, वह अपनी ही आत्मा को शुद्ध करता है; जो इसे किसी पक्ष की एकादशी या द्वादशी को सुनता है, वह दीर्घायु पाता है; और जो इसे पुष्कर, मथुरा या द्वारका में, अनाहार रहकर पढ़ता है, वह पुनर्जन्म के भय से मुक्त हो जाता है। देव, ऋषि तथा पितर उस पर अभीष्ट वर बरसाते हैं जो इसका पाठ या श्रवण करता है। जो ब्राह्मण इसका अध्ययन करता है वह सच्ची अन्तर्दृष्टि पाता, क्षत्रिय सार्वभौमत्व, वैश्य समृद्धि, तथा शूद्र पापों से मुक्ति; और प्रत्येक श्रद्धालु श्रोता परम गति पाने योग्य होता है।

कलिमलसंहतिकालनोऽखिलेशो
हरितरत्र न गीयते ह्यभीक्ष्णम् ।
इह तु पुनर्भगवानशेषमूर्तिः
परिपठितोऽनुपदं कथाप्रसङ्गैः ॥ ६६ ॥

*kali-mala-saṁhati-kālano 'khileśo harir itaratra na gīyate hy abhīkṣṇam iha tu punar bhagavān
aśeṣa-mūrtiḥ paripaṭhito 'nu-padam kathā-prasaṅgaiḥ*

अर्थ: श्रीहरि, समस्त के स्वामी, जो कलियुग की संचित मलिनताओं का नाश करते हैं, अन्यत्र इतनी निरन्तरता से नहीं गाए जाते; किन्तु इस ग्रन्थ में समस्त रूपों में प्रकट भगवान् प्रासंगिक आख्यानो द्वारा पग-पग पर महिमा-मण्डित हैं। (स्कन्ध 12, अध्याय 12, श्लोक 66)

विष्णु तथा शुक को प्रणाम

इस प्रकार सूत भक्तिभाव से दो प्रणाम अर्पित करते हुए अध्याय पूर्ण करते हैं — प्रथम उन अनादि, असीम भगवान् विष्णु को, जिन्हें ब्रह्मा, इन्द्र और शिव भी पूर्णतः नहीं जान पाते, और द्वितीय व्यासनन्दन ऋषि शुकदेव को, जो स्वयं आत्मानन्द में तृप्त होते हुए भी भगवान् की मनोहारी लीला-कथाओं के आकर्षण में बँधकर, जगत् के कल्याणार्थ इस पुराण को प्रकट करने हेतु प्रवृत्त हुए।

उपचितनवशक्तिभिः स्व आत्म-
न्युपरचितस्थिरजङ्गमालयाय ।
भगवत उपलब्धिमात्रधाम्ने
सुरऋषभाय नमः सनातनाय ॥ ६८ ॥

*upacita-nava-śaktibhiḥ sva ātmany uparacita-sthira-jaṅgamālayāya bhagavata upalabdhi-mātra-
dhamne sura-ṛṣabhāya namaḥ sanātanāya*

अर्थ: उस सनातन भगवान् को प्रणाम, देवों में अग्रगण्य, जिनका यथार्थ स्वरूप शुद्ध चैतन्य है, और जिन्होंने अपनी सुदृढ़ नौ शक्तियों द्वारा अपने ही आत्मा में चराचर सृष्टि के रूप में एक धाम विकसित किया है। (स्कन्ध 12, अध्याय 12, श्लोक 68)



सूत व्यास-पुत्र शुक को अपना श्रद्धापूर्ण प्रणाम अर्पित करते हैं, जो भगवान् की मनोहर कथाओं से आत्मा के आनन्द से आकृष्ट होकर समस्त के कल्याण हेतु भागवत-पुराण प्रकट करने की ओर मुड़े।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सम्पूर्ण भागवत भक्ति की एक ही धारा है। परीक्षित से कृष्ण तक और अन्तिम प्रलय तक, प्रत्येक स्कन्ध एक ही विषय पर घूमता है — श्रीहरि की महिमा तथा शुद्ध भक्ति का जागरण (श्लोक 5-44)।
2. भगवान् का नाम बिना संकल्प के उच्चारित होने पर भी पवित्र करता है। इसकी शक्ति इतनी है कि संकट में या संयोगवश “हरि!” की पुकार भी उसे मुक्त कर देती है जो इसे बोलता है — तब प्रेमपूर्वक कीर्तन से तो कहना ही क्या (श्लोक 46-47)।
3. वाणी तथा विचार भगवान् में ही अपनी पूर्णता पाते हैं। वही शब्द धन्य है जो उनकी महिमा गाता है, और उनके चरणों का निरन्तर स्मरण हृदय को शुद्ध करता तथा ज्ञान एवं वैराग्य जगाता है (श्लोक 48-54)।
4. भागवत प्रत्येक पंक्ति में उपस्थित भगवान् हैं। अन्य ग्रन्थों से भिन्न, यह पुराण भगवान् को “पग-पग पर” गाता है, ताकि इसे पढ़ना उनकी निरन्तर संगति में रहना हो (श्लोक 66)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

किसी गुरु का, समापन के निकट, अपने कहे सब कुछ को समेट लेने हेतु रुकना, कुछ गहन मार्मिक है। सूत का सारांश कोई नीरस विषय-सूची नहीं; यह उस जन का कृतज्ञ स्मरण है जो इन कथाओं के भीतर जीया है और चाहता है कि हम उन्हें समग्र रूप में देखें। राजाओं, ऋषियों तथा असुरों की लम्बी शोभायात्रा के पीछे, एक ही मूर्ति प्रत्येक पुस्तक में विचरती है — श्रीहरि, अवतरित होते, सिखाते, रक्षा करते, लीला करते। और सूत का सर्वाधिक कोमल बिन्दु सर्वाधिक सरल भी है: कि इन कथाओं की शक्ति हमारी पात्रता पर निर्भर नहीं। जो व्यक्ति केवल लड़खड़ाकर “हरि!” पुकार उठता है, वह कृपा से स्पर्शित होता है; भाषा में भेदी किन्तु भगवान् के नाम धारण करती रचना भी सुनने वालों को

पवित्र करती है। यही भागवत की महान् उदारता है — कि वह हमें जहाँ हम हैं वहीं मिलता है, और यह कि पवित्र नाम का एक भी सच्चा उच्चारण द्वार खोल देता है। इस सम्पूर्ण शास्त्र को एक ही दृष्टि में समेट लेना, जैसा सूत यहाँ करते हैं, यह देखना है कि इसके सहस्रों श्लोक वस्तुतः एक ही दीर्घ निमन्त्रण हैं — भगवान् का स्मरण करने का।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज सूत के सारांश को हृदय में धारण कीजिए, सम्पूर्ण भागवत को एक ही कृतज्ञ विचार में समेटकर — भगवान् की वह एक कथा जो सभी बारह स्कन्धों में बहती है। फिर पवित्र नाम के विषय में अध्याय की केन्द्रीय शिक्षा का सम्मान कीजिए: भगवान् के नाम को केवल उपासना में ही नहीं, अपितु दिन के छोटे क्षणों में भी अपने होंठों पर उठने दीजिए — एक ठोकर पर, एक आह पर, राहत के एक क्षण पर — ताकि “हरि” आपके हृदय की स्वाभाविक पुकार बन जाए। यदि सम्भव हो, भागवत के कुछ श्लोक पढ़िए या सुनिए, यह स्मरण करते हुए कि भगवान् इसमें “पग-पग पर” उपस्थित हैं। अन्त में “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” का एक निश्चित संख्या में जप कीजिए, इस पुराण की सम्पूर्ण पावन धारा के लिए कृतज्ञता अर्पित करते हुए।

उपसंहार

द्वादश स्कन्ध का द्वादश अध्याय भागवत का अपने ही ऊपर स्नेहपूर्ण दृष्टि डालना है। सूत गोस्वामी पुस्तक-दर-पुस्तक, शास्त्र के सम्पूर्ण विस्तार का स्मरण करते हैं — परीक्षित के जन्म तथा भगवान् के अवतारों से, महान् भक्तों तथा वंशों एवं श्रीकृष्ण की अनन्त लीलाओं से होते हुए, जगत् के प्रलय तथा साधु राजा के देहत्याग तक। फिर वे भगवान् के नाम तथा कथा की पवित्रकारी शक्ति की महिमा गाते हैं, इस पुराण को सुनने, पढ़ने तथा दान करने के समृद्ध आशीर्वादों की घोषणा करते हैं, और भगवान् विष्णु तथा शुक को, जिन्होंने भागवत सर्वप्रथम प्रकट किया, श्रद्धापूर्ण प्रणाम अर्पित करते हैं। इसके सारांश के नीचे एक ज्योतिर्मय सत्य निहित है: कि ये सभी कथाएँ एक ही कथा हैं, श्रीहरि की महिमा, और उनका स्मरण करना — एक ही शब्द से भी — इस पावन ग्रन्थ का समग्र प्रयोजन है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), द्वादश स्कन्ध, द्वादश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ॰ श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-12-adhyay-12-barah-skandhon-ka-saransh-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

